दादा भगवान परिवार का

सितम्बर २०२१

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

माँगू हूँ आपनी पासे माता,
प्रेमल मधुरी वाणी...

माँगू हूँ आपनी पासे माता,
प्रेमल मधुरी वाणी...

संपादकीय

इस वर्ल्ड में ऐसी कोई दवाई है जो किसी भी तरह की बीमारी को दूर कर सके? हाँ! वह दवाई है, ज्ञानी पुरुष की अद्‌भुत वाणी। ज्ञानी पुरुष के शब्दों में इतना बल होता है कि वे सभी दुःखों को दूर कर सकते हैं। अब हमें प्रश्न तो होगा ही न कि ज्ञानी की इतनी गज़ब की वाणी का क्या रहस्य है? वह रहस्य है, ज्ञानी कभी भी सरस्वती देवी के नियम नहीं तोड़ते हैं।

सरस्वती देवी के 'नियम' अर्थात्? जैसे ट्रैफिक के नियम होते हैं, स्कूल के नियमों का पालन करना पड़ता है वैसे ही देवी-देवताओं के भी कुछ नियम होते हैं।

चलो, इस अंक में समझते हैं कि सरस्वती देवी के क्या नियम हैं? उन नियमों का पालन करने से क्या फायदा होता है और नियमों का भंग करने से क्या नुकसान होता है? और हम प्रार्थना करें कि सरस्वती देवी खुश हो जाएँ और हम हमेशा मीठी-मधुरी वाणी बोलें।

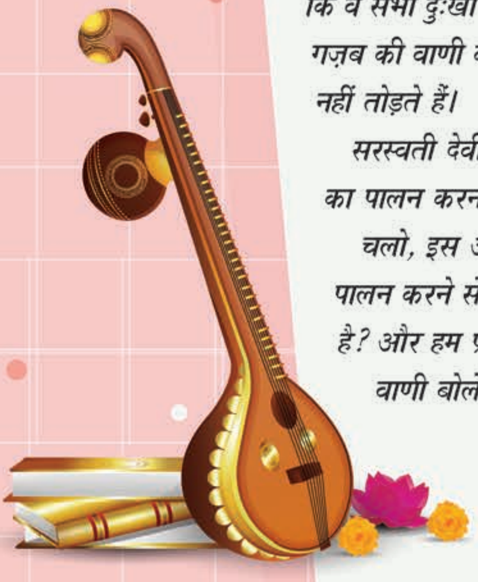

-डिम्पल भाई मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

वर्ष : ११ अंक: ५
अखंड क्रमांक: १०२
सितम्बर २०२१

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : सरस्वती देवी के क्या नियम हैं?

नीरू माँ : वाणी से किसी को किंचित्‌मात्र भी दुःख न हो।

प्रश्नकर्ता : इन नियमों का पालन करने से हमें पढ़ाई, संगीत या कोई भी कला सीखने में किस तरह से फायदा होता है?

पूज्यश्री : संगीत सीखना हो या पढ़ाई करनी हो, इन सभी में हमें अंतराय नहीं आएँगे। वाणी समझने में अंतराय नहीं आएँगे। वाणी का दुरुपयोग नहीं किया मतलब शक्ति कम नहीं होती। यानी शक्ति इतनी बढ़ जाती है कि पढ़ा हुआ हमें याद रह जाता है। ग्रास्पिंग पावर बढ़ जाता है। शब्दों में भी वचनबल उत्पन्न हो जाता है। किसी को दुःख नहीं देंगे तो हमें भी दुःख नहीं मिलेगा। यानी बहुत पॉज़िटिव रिज़ल्ट आएगा।

प्रश्नकर्ता : सरस्वती देवी का नियम तोड़ना किसे कहा जाता है?

नीरू माँ : जब हमारी वाणी से कोई हर्ट हो जाए तब समझ जाना कि सरस्वती देवी का नियम तोड़ा। उल्टा बोलना, निंदा-चुगली करना, महान पुरुषों के लिए खराब बोलना, किसी को डराना, किसी को ठगना, बात को बदल देना, यह सब सरस्वती देवी का नियम तोड़ा कहा जाता है। वाणी का दुरुपयोग करते हैं या वाणी से किसी का लाभ उठाते हैं तो सरस्वती माता खुश नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : सरस्वती माता के नियमों का पालन करने का क्या फल मिलता है?

दादाश्री : वाणी का किसी भी प्रकार से दुरुपयोग नहीं किया हो तब वचनबल उत्पन्न होता है।

बोलना हो तो पॉज़िटिव बोलना, नेगेटिव मत बोलना। किसी को दुःख हो ऐसा नहीं बोलना चाहिए। हेल्प हो ऐसा करना चाहिए। तो फिर वचनबल उत्पन्न होता है। फिर उसके शब्द इतने कीमती हो जाते हैं कि दो शब्द बोलने से ही सामने वाला इंसान धन्य हो जाता है कि मेरा हृदय परिवर्तन हो गया, मेरी ज़िंदगी सुधर गई।

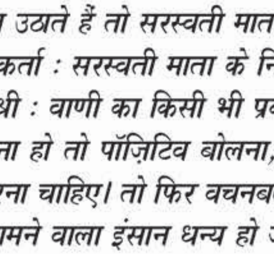

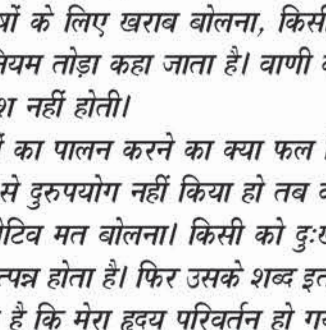

यह तो नई

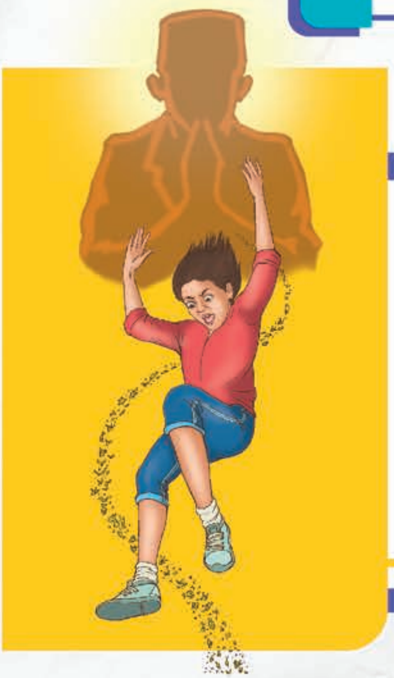

'हमारा' वचनबल तो अद्‌भुत कहलाता है! हम बोलें कि, 'ऐय, कूद जा', तो सामने वाला दस फुट चौड़े गड्ढे में कूद जाएगा! हमारे वचन में ही ऐसा बल है!

वाणी को जैसी मोड़ना चाहें वैसी मुड़ सकती है।

उ.दा. "क्या सभी बेवकूफ की तरह यहाँ बैठे हुए हो! खाना खाने जाओ!" ऐसी वाणी दुखदायी कही जाती है। ऐसी दुखदायी वाणी को मीठी वाणी में इस तरह से मोड़ सकते हैं, "भाइयों, खाना खाने के लिए पधारिए।"

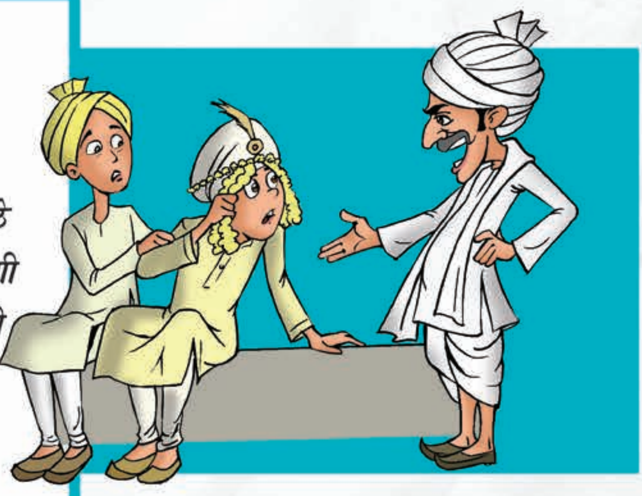

ही बात है!

जो व्यक्ति झूठ बोलता है उस पर कोई विश्वास नहीं करता।

“हे दादा! कंठ में विराजमान हो जाइए।” इससे वाणी सुधर जाएगी। गले में दादा का निदिध्यासन करने से भी वाणी सुधर जाती है।

रहस्यमयी सफर

एक बहुत बड़ा दरवाज़ा दरवाज़ा इतना सुंदर कि किसी को भी अंदर जाने की इच्छा हो जाए। दरवाज़ा सुंदर और सुगंधित फूलों से ढँका हुआ था। आसपास छोटे झरने भी थे।

निसर्ग को भी अंदर जाने की इच्छा हुई। लेकिन वह अंदर दाखिल हो उससे पहले ही एंजल ने उसे अंदर जाने से रोका।

एंजल ने कहा, "यह कोई साधारण दरवाज़ा नहीं है। यह तो रहस्यमयी फेरीलैंड है। इसके अंदर जाने के लिए कुछ रूल्स हैं।"

निसर्ग को सब्र नहीं हो रहा था, उसे तो अंदर जाना ही था।

उसने एंजल से कहा, "मुझे सभी रूल्स मंजूर हैं। लेकिन मुझे अंदर जाने की परमिशन दीजिए।"

एंजल ने एक स्टिक घुमाई और दरवाज़े पर कुछ लिखा हुआ दिखाई दिया।

निसर्ग ने ध्यान से रूल्स पढ़े और सोचकर कहा, "ओहो, इतनी सी ही बात है! मुझे सब मंजूर है।"

दरवाज़ा खुल गया और गीत गाते हुए सुंदर पक्षियों ने निसर्ग को घेर लिया। तभी सफेद-सफेद मुलायम बादल उससे लिपट गए। बादलों के थोड़े दूर जाने के बाद निसर्ग ने देखा कि उसके पास से चॉकलेट से भरी एक ट्रेन जा रही है। उसने तुरंत ही एक मुट्ठी चॉकलेट लेकर अपनी जेब में रखी ली।

वह एक चॉकलेट मुँह में डालने जा ही रहा था कि एक सुंदर एंजल उसके सामने आई।

एंजल कुछ पूछे उससे पहले ही निसर्ग ने कहा, 'यह चॉकलेट तो मैं घर से लाया हूँ।'

एंजल कुछ भी बोले बिना ही गायब हो गई।

निसर्ग आगे जाने का सोच ही रहा था तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी, 'वेलकम टु दिस ब्यूटिफुल वर्ल्ड। पहले आए हुए दस बच्चे अंदर जा सकते हैं।'

निसर्ग जैसे और भी बच्चे वहाँ पर थे। लेकिन पहले दस बच्चों को ही अंदर जाने की परमिशन मिली तो निसर्ग को लगा कि वह बाहर ही रह जाएगा। इसलिए सभी बच्चों को धक्का मारते हुए वह आगे पहुँच गया। वहाँ खड़ी एंजल की सख्त नज़र देखकर उसने कहा, "मैं तो पहले ही आया था। बस, थोड़ा पीछे खड़ा था।"

दरवाज़े के अंदर एक एंजल भोजन लेकर आई। एंजल ने प्रेम से निसर्ग को भोजन परोसा।

पहला कौर मुँह में रखते ही निसर्ग के मुँह से चीख निकल गई। 'ऐसा फीका खाना मुझे अच्छा नहीं लगता!! मुझे तो चटपटा खाना ही अच्छा लगता है!'

एंजल ने पूछा : 'जब कभी मम्मी ऐसा खाना बनाती हैं तब तुम क्या करते हो?'

निसर्ग ने मुँह बिगाड़ते हुए कहा, 'मैं छूता भी नहीं। और मम्मी से दूसरा बनाने के लिए कहता हूँ।'

एंजल निराश होकर अदृश्य हो गई।

अब निसर्ग सोच में पड़ गया। उसे इतना तो समझ में आ गया था कि सभी एंजल्स उससे नाराज़ थीं। लेकिन ऐसा क्यों था, वह उसे समझ में नहीं आया।

उसी समय किसी ने निसर्ग के कपड़े खींचे। उसने पीछे मुड़कर देखा तो एक छोटा सा पिल्ला था। निसर्ग इतना अपसेट था कि उसने गुस्से

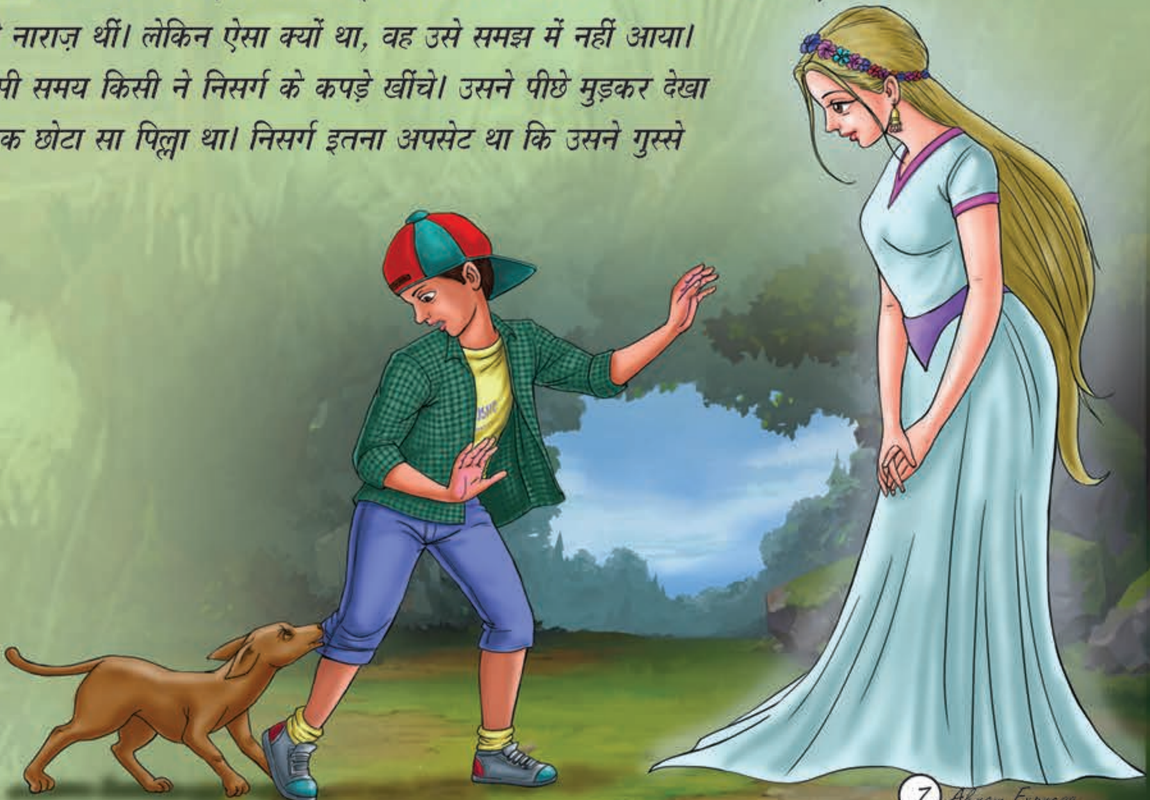

में पिल्ले को "चल, हट" कहा और उसे डराकर भगा दिया। उसी समय फिर एक एंजल आई और कुछ भी बोले बिना अदृश्य हो गई।

एक के बाद एक दरवाज़े पार करते हुए, अंत में निसर्ग एक बड़े दरवाज़े के पास पहुँचा। फेरीलैंड में देखे हुए सभी दरवाज़ों से यह दरवाज़ा ज्यादा सुंदर था। तभी एक एंजल प्रकट हुई और निसर्ग से पूछा, "क्या तुमने फेरीलैंड के सभी रूल्स फॉलो किए हैं?"

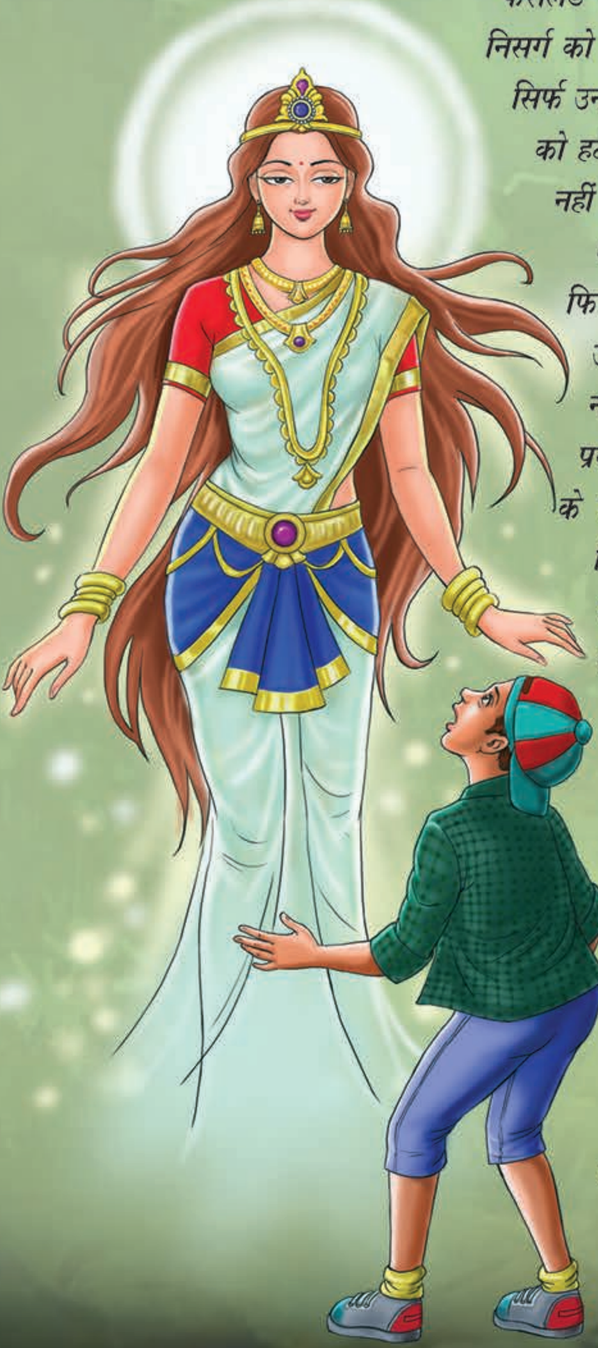

फेरीलैंड में प्रवेश करने से पहले एंजल के बताए हुए रूल्स निसर्ग को याद आए। दरवाज़े पर लिखा था, "इस फेरीलैंड में सिर्फ उन्हीं बच्चों को एंट्री मिलेगी जो अपनी वाणी से दूसरों को हर्ट नहीं करेंगे, किसी भी तरह से वाणी का दुरुपयोग नहीं करेंगे।"

बड़े दरवाज़े के अंदर जाने की लालच में निसर्ग को फिर एक बार झूठ बोलने की इच्छा हुई। लेकिन फिर उसे एंजल्स के नाराज़ चेहरे याद आएँ। एंजल्स की नाराज़गी उसे ज़रा भी पसंद नहीं थी। फेरीलैंड में प्रवेश करने के बाद के सभी सीन्स निसर्ग की आँखों के सामने फ्लैश हुए। उसने स्थिरता से सोचा और हिम्मत इकट्ठा करके कहा, "नो, आइ एम रियली सॉरी। मैंने यहाँ के रूल्स फॉलो नहीं किए हैं।" निसर्ग का जवाब सुनकर एंजल हैप्पी हो गई।

पहली बार उसने किसी एंजल को हैपी देखा तो वह भी खुश हो गया। एंजल ने प्रेम से कहा, "वेरी गुड निसर्ग। भूल हो जाए उसमें कोई आपत्ति नहीं है लेकिन भूल का हमें पता ही नहीं चले उसमें आपत्ति है। तुमने अपनी भूल को स्वीकार कर लिया इसलिए मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। तुम्हें पता है कि तुमने किन-किन जगहों पर वाणी का दुरुपयोग किया है?"

"हाँ, मैंने चॉकलेट ट्रेन से चॉकलेट लेकर झूठ बोला कि ये चॉकलेट मैं घर से लाया हूँ। मैं चीटिंग

करके लाइन में आगे खड़ा हो गया और झूठ बोला कि मैं पहले से ही आगे खड़ा हूँ।" निसर्ग ने अपनी गलतियाँ स्वीकार की।

एंजल ने कहा, "वेरी गुड निसर्ग। और खाना अच्छा नहीं लगा, ऐसा कहकर एंजल को हर्ट किया था और छोटे से पिल्ले को डराकर भगा दिया था, यह भी वाणी का दुरुपयोग किया कहा जाएगा।"

"ओह, ऐसा?" निसर्ग को आश्चर्य हुआ। और मन में पक्का विश्वास हो गया कि अब उसे अंतिम दरवाज़े के अंदर जाने नहीं मिलेगा।

इतनी देर में तो दरवाज़ा अपने आप ही खुल गया।

"मैं अंदर जा सकता हूँ?" निसर्ग ने डरते हुए पूछा।

"हाँ," एंजल ने एक बहुत मीठी स्माइल दि और अदृश्य हो गई।

निसर्ग ने अंदर देखा तो एक बहुत सुंदर एंजल दिखाई दी। उनके आसपास एक सफेद रंग का आभामंडल था। उन्हें देखते ही निसर्ग के मन में अच्छे भाव होने लगे। बोलने के लिए मुँह खोलते समय उसे ऐसा लगा जैसे उसके मुँह से फूल झड़ने लगेंगे। निसर्ग को आश्चर्य हुआ कि उसके साथ यह क्या हो रहा है!!

एंजल ने निसर्ग से अंदर आने के लिए कहा। उन्होंने अपना परिचय दिया, "मेरा नाम माता सरस्वती है। तुम मुझे विद्या की, वाणी की देवी मानकर मुझे खुश करने के लिए मेरी पूजा करते हो लेकिन तुम यह सब नहीं करोगे तो भी चलेगा।"

निसर्ग को आश्चर्य हुआ, "तो फिर आपको खुश करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?"

सरस्वती माता ने अपनी मीठी मधुर आवाज़ में कहा, "वाणी से किसी को दुःख नहीं दोगे तो मैं खुश हूँ।"

सरस्वती माता की बात सुनकर निसर्ग को फिर से अपनी भूल पर पछतावा हुआ।

"लेकिन तुम्हारी तरह जिन बच्चों को अपनी भूल का पता चलता है और भूल की माफी माँग लेते हैं, वे बच्चे मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।" निसर्ग के दिल की बात सुनकर सरस्वती माता ने प्रेम से कहा।

निसर्ग ने निश्चय किया, "मैं अपनी वाणी से किसी को हर्ट नहीं करूँगा। और यदि किसी को दुःख दे दिया तो तुरंत ही माफी माँग लूँगा।"

माता ने पूछा, "क्या तुम्हें इस रहस्यमयी फेरीलैंड का आगे का सफर करना अच्छा लगेगा?"

"हाँ, ज़रूर!"

माता ने निसर्ग को आगे का रास्ता दिखाया और अदृश्य हो गई।

निसर्ग थोड़ा आगे गया तो उसे एक दरवाज़ा दिखाई दिया। दरवाज़े पर कुछ लिखा था। निसर्ग ने पढ़ा और अंदर जाने के लिए उत्साहित हो गया।

क्रमशः

My Creation

1

2

3

4

5

6

7

8

9

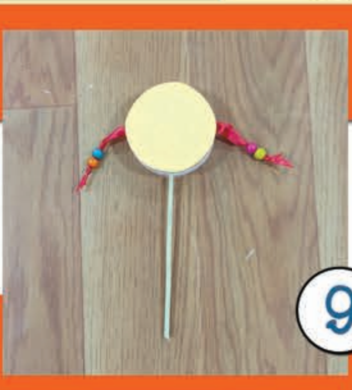

10

कौआ और सियार

एक कौआ था। एक दिन दोपहर को उसे भूख लगी। खाना ढूँढने के लिए वह यहाँ-वहाँ उड़ने लगा तभी उसे रोटी का एक टुकड़ा मिला। कौआ बहुत खुश हो गया और एक पेड़ की ऊँची डाली पर जाकर बैठ गया। वह रोटी खाने वाला ही था कि तभी उसे एक सियार की आवाज़ सुनाई दी, "अरे कौआ भाई, आज तो आप बहुत सुंदर लग रहे हो! आपके पंख बहुत चमक रहे हैं। बस, एक बार मुझे आपका मधुर गीत सुना दो! आज आपकी आवाज़ सुनने की बहुत इच्छा हो रही है।"

कौआ तो अपनी प्रशंसा सुनकर खुशी से फूल गया! जैसे ही उसने गाना गाने के लिए मुँह खोला कि मुँह में से रोटी का टुकड़ा नीचे गिर गया। सियार ताक लगाकर बैठा था। रोटी का टुकड़ा ज़मीन पर गिरने से पहले ही उसने लपक लिया और मज़े से खाते-खाते भाग गया।

यह दृश्य एक खरगोश ने देखा। खरगोश ने बंदर से कहा। बंदर ने हाथी से कहा। इस तरह यह बात पूरे जंगल में फैल गई कि सियार अपना काम निकलवाने के लिए दूसरों से मीठी-मीठी बातें करके उन्हें धोखा देता है। उस दिन से सियार ने हमेशा के लिए जंगल के सभी प्राणियों का विश्वास खो दिया।

मित्रों, यदि हम अपने स्वार्थ के लिए, अपने लाभ के लिए, अपना काम निकलवाने के लिए दूसरों को धोखा देते हैं या दूसरों की झूठी प्रशंसा करते हैं तो वह वाणी का बहुत बड़ा दुरुपयोग कहा जाता है। यदि हम वाणी का ऐसा दुरुपयोग करेंगे तो लोगों का हम पर से विश्वास उठ जाएगा।

इन शब्दों के कारण हुआ

महाभारत

बंजर वन प्रदेश में पाँच पांडवों ने देवों की नगरी जैसा 'इंद्रप्रस्थ' शहर बनाया और उसमें एक आलीशान महल बनवाया। उन्होंने कौरवों को इंद्रप्रस्थ आने का निमंत्रण भेजा।

दुर्योधन और अन्य कौरव कुमार इस निमंत्रण को स्वीकार करके इंद्रप्रस्थ आए। वे इंद्रप्रस्थ की शोभा और समृद्धि देखकर दंग रह गए। वे पांडवों का आलीशान महल देखने निकले। महल की रचना ऐसी थी कि जिस जगह पानी दिखता था वास्तव में वहाँ ज़मीन थी और जिस जगह ज़मीन दिखती थी वास्तव में वहाँ पानी था। इसकी जानकारी नहीं होने की वजह से जहाँ ज़मीन थी वहाँ चलते समय दुर्योधन ने अपने वस्त्र ऊपर उठा लिए। थोड़ा आगे जाने के बाद, दुर्योधन ज़मीन समझकर चलने लगे, लेकिन वहाँ पानी था इसलिए वे गिर गए और पूरे भीग गए।

महल के एक झरोखे से पांडवों की पत्नी द्रौपदी ने यह द्रश्य देखा। वे ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगीं और बोलीं, "अंधे का पुत्र अंधा ही होगा न!" दुर्योधन के पिता धृतराष्ट्र जन्म से ही अंधे थे।

दुर्योधन अंधे नहीं थे। सिर्फ महल की भूल-भुलैया से अनजान थे। द्रौपदी के इन कड़वे शब्दों से दुर्योधन को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने उसी समय द्रौपदी से बदला लेने का निश्चय कर लिया। और वहाँ पर ही महाभारत के युद्ध का बीज डल गया, जिसमें महापुरुषों के अलावा अनेक युवाओं ने अपने प्राण गँवाए।

देखा मित्रों, कड़वे शब्द कितना बड़ा विनाश कर सकते हैं? कड़वे शब्द बोलना वाणी का भयंकर दुरुपयोग किया कहा जाता है। जो शब्द दूसरों को दुखदायी हों ऐसे शब्द नहीं बोलने चाहिए।

जादूगरी टोली

सात समुंदर पार टिंबकटु नामक एक राज्य था। राज्य में सुंदरता तो बहुत थी लेकिन मुश्किल यह थी कि राज्य के बच्चों को पढ़ने में रुचि नहीं थी। सालों से यह परंपरा थी कि किसान का पुत्र किसान बनेगा और कुम्हार का पुत्र कुम्हार बनेगा।

कुछ युवकों को इस परंपरा में बदलाव लाना था। लेकिन उनकी बात सुनने के लिए कोई तैयार ही नहीं था। युवकों ने माता-पिता को अपने बच्चों को पढ़ने भेजने के लिए बहुत समझाया लेकिन उनकी बात किसी ने स्वीकार नहीं की।अंत में, उन पाँच युवकों की टोली टिंबकटु के एक बड़े जादूगर के पास पहुँची। जादूगर की बात सुनकर टोली को बहुत आश्चर्य हुआ। युवकों ने पूछा, "सचमुच, बस इतना ही करने से प्रजाजन हमारी बात मान जाएँगे?" जादूगर ने विश्वासपूर्वक कहा, "हाँ, ज़रूर।"

कई महीनों तक पाँचों युवकों ने जादूगर के कहे अनुसार किया। उसके बाद वे फिर से प्रजाजनों को पढ़ाई का महत्व समझाने निकल पड़ें। और इस बार प्रजाजनों ने इन पाँचों की बात आसानी से स्वीकार कर ली। माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए तैयार हो गए।

पाँचों युवक फिर से जादूगर के पास गए और उनसे पूछा, "ये कैसा जादू? जो लोग हमारी बात सुनने के लिए तैयार नहीं थे, उन्होंने इतनी आसानी से हमारी बात कैसे स्वीकार कर ली?"

जादूगर ने बताया, "यह जादू नहीं, यह तो वचनबल है। मेरे कहे अनुसार आपने कई महीनों तक वाणी का बिल्कुल भी दुरुपयोग नहीं किया। किसी को दुःख हो जाए ऐसा नहीं बोला, किसी को ठगा नहीं, झूठ नहीं बोला इसलिए आपकी वाणी में इतनी शक्ति उत्पन्न हो गई कि आप जो भी कुछ बोलो वह सामने वाला तुरंत ही स्वीकार कर ले।"

और अब, पाँचों की टोली को लोग 'जादूगरी टोली' की तरह पहचानते हैं क्योंकि अब उनके पास लोगों का हृदय परिवर्तन करने की शक्ति है।

इम्पॉसिबल टू पॉसिबल

दोपहर का समय था। आतिश के घर उसके तीन दोस्त पढ़ाई करने के लिए इकट्ठा हुए थे। लेकिन उस दिन उनके लिए पढ़ाई करना मुश्किल हो गया था। मन लगाकर पढ़ाई करे भी तो कैसे? क्योंकि नीचे ही बास्केटबॉल कोर्ट में कॉलेज के कुछ लड़के तेज़ आवाज़ में म्यूज़िक चलाकर ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे।

तरंग ने कहा, "आतिश, यार यह क्या न्युसन्स है? उनसे कहो न कि आवाज़ कम करें।"

आतिश ने धीर से कहा, "नॉट पॉसिबल। मैं इन लड़कों को जानता हूँ। ये मेरी बात नहीं मानेंगे।"

"अरे, क्यों नहीं मानेंगे?" तरंग ने बाहें चढ़ाई और कहा, "अभी जाकर उन लड़को को सबक सिखाता हूँ।" चारों दोस्तों में तरंग सब से अधिक बलवान था। शरीर से स्ट्रोंग और दिमाग़ से गरम था।

आतिश कुछ कहे उससे पहले ही तरंग घर से बाहर निकल चुका था। आतिश और उसके तीनों दोस्त घर की बालकनी से तरंग को उन लड़कों से बात करते हुए देख रहे थे। देखा तो उन लड़कों ने तरंग की बात मानी तो नहीं बल्कि म्यूज़िक का वॉल्यूम और बढ़ा दिया।

इतने बड़े लड़कों के सामने अपना कुछ चलेगा नहीं, ऐसा सोचकर तरंग घर वापस आ गया।

तरंग ने गुस्से से कहा, "आज तो शांति से पढ़ने का कोई चान्स ही नहीं है।"

थोड़ी देर बाद संयम बाहर जाने के लिए खड़ा हुआ।

"ऐय जूनियर, कहाँ चला? पढ़ने का चान्स नहीं है तो इसका मतलब यह नहीं कि हम अभी से घर चले जाएँ।" ऋषभ ने संयम को रोका।

संयम ने अपना चश्मा सीधा करके कहा, "घर नहीं, मैं तो बास्केटबॉल कोर्ट में उन लड़कों से शांति रखने के लिए कहने जा रहा हूँ।"

"वॉट!!" आतिश आश्चर्य से खड़ा हो गया, "अरे, तूने देखा नहीं कि उन लोगों ने तरंग की बात बिल्कुल ही उड़ा दी। तेरे जैसे दुबले-पतले को तो वे लोग एक मुक्के में हवा में उड़ा देंगे।"

संयम ने अपने दोस्तों को देखकर स्माइल दि और उन लड़कों से बात करने गया।

तीनों दोस्त संयम को ऐसे देख रहे थे मानो वह सिंह की गुफा में जा रहा हो। संयम जब उन लड़कों के पास पहुँचा तब बालकनी में खड़े तीनों दोस्तों की साँसें रुक गईं।

लेकिन बाद में जो द्रश्य देखा, उस पर किसी को यकिन नहीं हुआ। न सिर्फ उन लड़कों ने म्यूज़िक का वॉल्यूम कम कर दिया बल्कि संयम के साथ हँसकर बातें भी कीं।

"हाउ इज़ दिस पॉसिबल?" तरंग को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ।

थोड़ी देर रुककर संयम घर वापस आया और किताब खोलकर पढ़ने लगा।

"वेल, हमें सस्पेंस में रखने की कोई ज़रूरत नहीं है," आतिश, तरंग और ऋषभ ने संयम को घेर लिया, "तूने उन लड़कों को शांत किस तरह किया?"

"इट वॉज़ नो बिग डील," संयम ने जवाब दिया, "मैंने उनसे शांति से कहा कि दो दिन बाद हमारा टेस्ट है और म्यूज़िक की वजह से हमें डिस्टर्ब हो रहा है। और पता है, वे लोग बहुत अच्छे हैं। उन्होंने तुरंत ही म्यूज़िक का वॉल्यूम कम कर दिया।"

तरंग को समझ में नहीं आ रहा था, "लेकिन वे लोग मेरी बात सुनने के लिए तैयार ही नहीं थे और तेरी बात सुनकर बटर की तरह पिघल कैसे गए?"

संयम ने कहा, "मेरी मम्मी ने मुझे सिखाया है कि यदि गुस्से से कड़वे शब्द बोलेंगे तो कोई हमारी बात नहीं सुनेगा। लेकिन यदि मीठे शब्द बोलेंगे और समझाकर बात करेंगे तो हमारी बात सामने वाले तक पहुँचेगी ही! और बस, मैंने ऐसा ही किया!"

उस दिन बच्चों ने टेस्ट के लिए पढ़ाई तो की ही लेकिन एक और अमूल्य पाठ भी सीखा कि मीठे शब्दों से इम्पॉसिबल काम भी पॉसिबल हो जाता है।

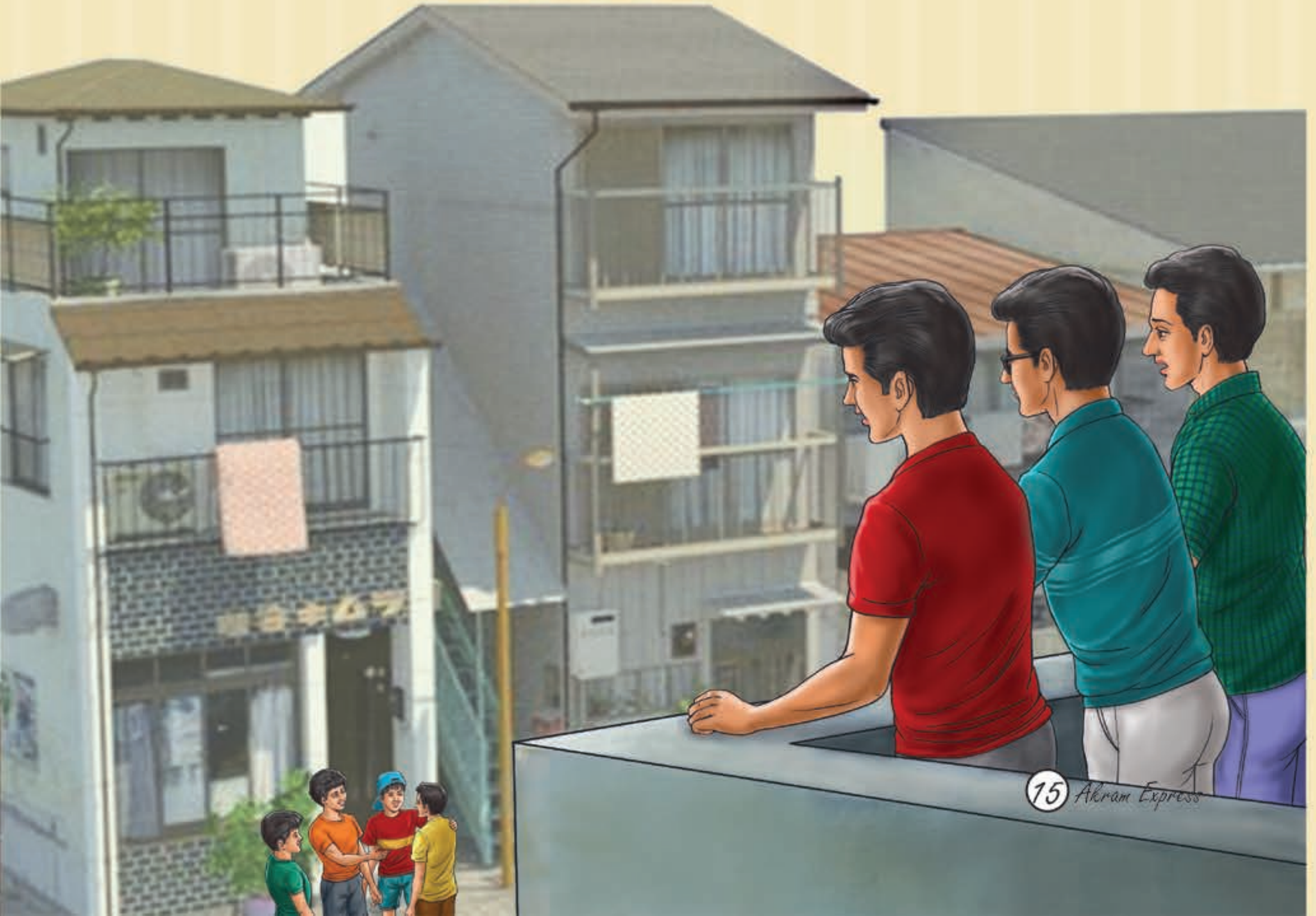

मैजिकल वॉटर

क्या हुआ अनीका, इतनी अपसेट क्यों हो?
मैं इतनी मेहनत करती हूँ, फिर भी मेरे अच्छे मार्क्स नहीं आते।
टेल मी, तुम झगड़ा करती हो?
वह झगड़ती है तो फिर मैं भी झगड़ा करती हूँ। वह मुझे एक बात सुनाती है तो मैं उसे चार सुनाती हूँ।
तुम मिहीका के साथ झगड़ा करती हो?
ओह लेकिन मार्क्स और मिहीका के साथ झगड़ने का क्या कनेक्शन है?
यह लो मैजिकल वॉटर। जब मिहीका तुमसे झगड़ा करने आए तब तुम तुरंत दो घूँट पानी मुँह में भर लेना। और जब उसकी बात खत्म हो जाए तब पानी निगल जाना। ओके?
ओ...के।
कुछ समय बाद,
अंकल, आपका दिया हुआ पानी तो रियली मैजिकल है। मेरा मिहीका से झगड़ा कम हो गया है और अब मुझे पढ़ा हुआ याद भी रहता है।
प्लीज़ अंकल, मुझे और पानी देंगे? बोतल का पानी खत्म होने आया है।

अब तुम्हें पानी की ज़रूरत नहीं है!
क्यों?
उस पानी में कोई मैजिक था ही नहीं। झगड़े के समय तुम्हारे मुँह में पानी भरा होता था इसलिए तुम अर्ग्यूमेन्ट नहीं कर पाती थी। जिससे मिहीका का गुस्सा जल्दी शांत हो जाता था।
दो व्यक्तियों के झगड़े में यदि एक व्यक्ति शांत हो जाए तो दूसरा अपने आप धीरे-धीरे शांत हो जाता है। तुम दोनों के साथ भी ऐसा ही हुआ।
ओह ऐसा! लेकिन मुझे पढ़ा हुआ याद क्यों रहने लगा?
क्योंकि तुमने झगड़ा करके शक्ति वेस्ट नहीं की। तुम्हारी शक्ति बढ़ गई इसलिए तुम्हें पढ़ा हुआ याद रहने लगा।
सिरियसली?
हाँ, सिरियसली! यदि वाणी से किसी को दुःख न होने दें तो ग्रास्पिंग पावर धीरे-धीरे अच्छा हो जाता है।

छोटी-छोटी बातें
नोरी, कितना अच्छा दिन है! चल न खेलने।
हा... हा.. हा..
हा... हा.. हा...
लेकिन नोरी को दिन में कहाँ दिखाई देता है?
कुछ दिखाई नहीं देता
हा... हा.. हा...
हा... हा.. हा...
प्लीज़ यार! वह अंधा नहीं है, सिर्फ कलर ब्लाइंड है। इसलिए उसे दिन में मीनू मेरी तरह काली दिखाई देती है।
डोंट बी सैड नोरी। उन्हें पता नहीं है कि किसी का मज़ाक उड़ाने से खुद में भी वैसी ही डिफेक्ट आ जाती है और फिर सभी उसका मज़ाक उड़ाते हैं।

सरस्वती वंदना

चलो, सरस्वती देवी की वंदना करें। देवी से प्रेम भरी मधुर वाणी बोलने की शक्ति माँगें और कभी भी उनके नियम भंग न हों ऐसी प्रार्थना करें। नीचे दी गई प्रार्थना के 'मिसिंग' शब्द इस लिंक पर से (https://kids.dadabhagwan.org/gallery/music/All+Albums/sarsawati/) ढूँढ निकालें। मिसिंग शब्द काग़ज़ पर लिखें और साथ ही सरस्वती देवी से दिल से शक्ति माँगें कि हमारी वाणी से कभी किसी को दुःख न हो!

सरस्वती देवी आप अमारी ---- देनारी,
माँगू हूँ आपनी पासे माता मधुरी ---- वाणी। (२)
वाणीनो दुरुपयोग ज्यां कर्यो,
झूठ, ----, प्रपंच थी
----- --क्षमा द्यो अमने,
फरी भूल ऐवी ना करीए।
हे शारदामाता सन्मुखे उच्चरावो सवड़ी वाणी।(२)
माँगू हूँ आपनी पासे...
हाँसी उड़ावी करी ----,
जोखम ऐमां भारी।
ऐ जीवमां भगवान बिराजे,
झुकिए -- माँगी।
आपना --- पाड़ीने माता करीए तमने राजी।
माँगू हूँ आपनी पासे...
प्रत्यक्ष छे आ -----,
मालिकी वगर नी --।
काढ़ी नाखशे काम विश्वनुं,
लाखों ---- जगावी।
अहो --- वीतरागी दादा नमूँ हूँ वारी-वारी,
माँगू हूँ आपनी पासे माता --- --- वाणी।(२)
सरस्वती देवी आप अमारी विद्यानी देनारी,
--- आपनी पासे माता प्रेमल मधुरी वाणी।(२)

Akram Express

September 2021
Year : 11, Issue : 5
Conti. Issue No.: 102

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

Global LMHT kids camp 2021

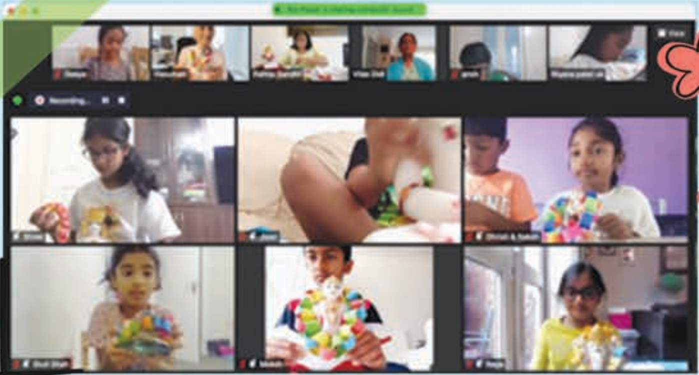

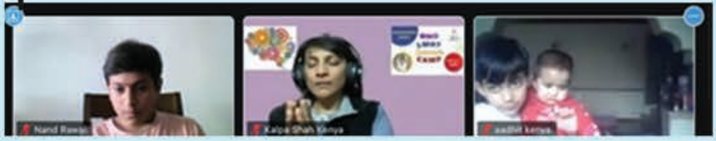

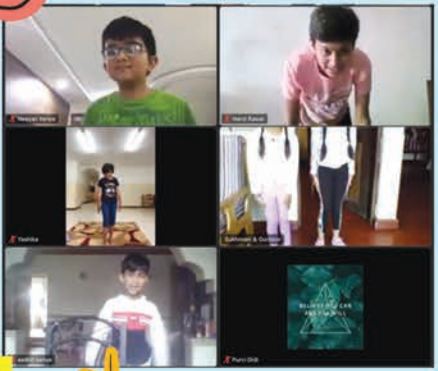

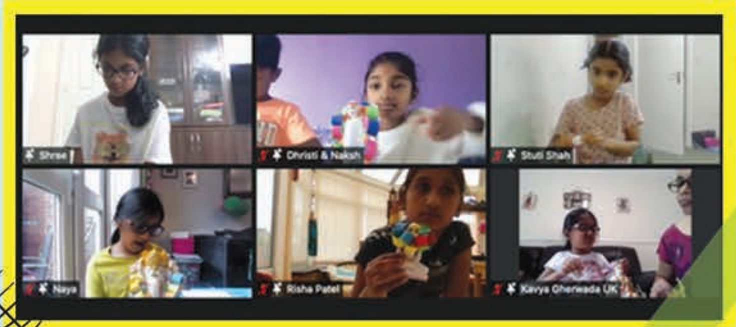

सरस्वती वंदना के जवाबः

विद्या नी, प्रेमल, असत्य, सरस्वती माता, मश्करी, माफी, कायदा, सरस्वती, वाणी, हृदय ने, गज़ब, प्रेमल मधुरी, माँगू हूँ

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **Whatsapp** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025